हिरोशिमा की याद

एवम्

अन्य कविताएँ

ヒロシマの記憶

と

他の詩

सुरेश ऋतुपर्ण

スレーシュ リトゥパルナ

युद्ध की विभीषिका के संदर्भ में जब अपने छात्रों के बीच मैंने एक दिन हिरोशिमा का जिक्र किया, तो मेरे एक जापानी छात्र ने कहा—'हम हिरोशिमा को याद रखना नहीं चाहते। हमें अपने अतीत नहीं, भविष्य को देखना है।' यह सुनकर मेरा मन उद्वेलित हो उठा। प्रश्न उभरा, क्या अतीत को भूल कर हमारा कोई भविष्य हो सकता है? और यदि हिरोशिमा को भुला दिया गया तो न जाने कितने हिरोशिमा और हो जाएँगे। हिरोशिमा की याद ने ही तो विश्व को बार-बार चेताया है कि परमाणु-युद्ध की विभीषिका क्या है। आज पूरी मानवता पर विध्वंस और आतंकवाद के काले बादल मंडरा रहे हैं। उसमें छिपी किसी एक चिंगारी से परमाणु बमों के ढेर पर बैठे किसी सिरफिरे राजनेता की अहमन्यता से परमाणु युद्ध शुरू हो सकता है और तब मानव सभ्यता हमेशा हमेशा के लिए नेस्तनाबूद हो जाएगी। ऐसे में हिरोशिमा की याद ही विश्व-शांति के लिए आशा की किरण सिद्ध हो सकती है। मेरे लिए हिरोशिमा का क्षत-विक्षत डोम उतना ही महत्त्वपूर्ण है जितना कि ताजमहल। प्रेम का प्रतीक है ताजमहल तो हिरोशिमा का डोम अपनी पीड़ा के सहारे हमें विश्व शांति का संदेश देता है। इसलिए मेरे मन में यह बात एकदम साफ होती चली गई कि यदि विश्व को परमाणु बम की त्रासदी से बचाना है तो हिरोशिमा की याद को भी बचाए रखना जरूरी है। इस संग्रह की कविताएँ उसी याद को बचाने की एक कोशिश हैं।

हिरोशिमा की याद
एवम्
अन्य कविताएँ

ヒロシマの記憶
と
他の詩

हिरोशिमा की याद

एवम्

अन्य कविताएँ

ヒロシマの記憶

と

他の詩

सुरेश ऋतुपर्ण

スレーシュ リトゥパルナ

जापानी अनुवाद

日本語訳

हिदेआकि इशिदा

石田英明

चित्रांकन

挿絵

अशोक भौमिक

アショーク ボゥミク

गौरव प्रकाशन | ゴゥラヴ出版社

दिल्ली-भारत | デリー インド

हिरोशिमा की याद

एवम्

अन्य कविताएँ

प्रथम संस्करण 2017

ISBN : 978-81-906403-9-8

प्रकाशक

गौरव प्रकाशन

ए-148, विवेक विहार

दिल्ली-110095

ईमेल : *gaurav.prakashan@gmail.com*

मुद्रक

विकास कम्प्यूटर एण्ड प्रिन्टर्स

नवीन शाहदरा, दिल्ली-110032

HIROSHIMA KI YAAD EVAM ANYA KAVITAYEN

ヒロシマの記憶 と 他の詩

by 著者

Suresh Rituparna スレーシュ リトゥパルナ

Published by 出版

Gaurav Prakashan ゴゥラヴ出版社

gaurav.prakashan@gmail.com

Gaurav Prakashan

A-148, Vivek Vihar Delhi-110095 (India)

Printed by

Vikas Computer & Printers,

Naveen Shahdara, Delhi-110032

Price : Rs.250/- 価格 1000 ¥

दो शब्द

हिरोशिमा की त्रासदी हमारी सभ्यता के इतिहास की एक ऐसी त्रासदी है जिसकी याद आज भी हमें भयाक्रांत कर जाती है और एक ऐसे समय में जब विश्व की प्रमुख शक्तियों ने परमाणु बमों का विशाल भंडार एकत्रित किया हुआ है, इस त्रासदी को याद करना इसलिए भी जरूरी लगने लगता है कि इसकी भयावह स्मृति ही ऐसे किसी भी कुकृत्य की पुनरावृत्ति होने से बचायेगी। कम से कम ऐसी आशा तो की ही जा सकती है। इस संग्रह की पाँचों कविताओं की मूल संवेदना में ऐसी ही आशंका समाई हुई है क्योंकि आज का वैश्विक परिदृश्य जिस प्रकार आतंक और हिंसा की आग में निरन्तर झुलस रहा है, एक छोटी सी चिंगारी ही पृथ्वी का सर्वनाश करने वाली सिद्ध हो सकती है।

यह अजब संयोग ही है कि मैंने जब इन कविताओं को एक छोटी पुस्तक के रूप में प्रकाशित करने की बात भारत के एक अत्यन्त प्रतिष्ठित चित्रकार श्री अशोक भौमिकजी से साझा की तो उन्होंने सहज उत्साह से कहा कि इन कविताओं के साथ मानवीय इतिहास की इस त्रासदी को रूपायित करने वाले उनके श्वेत-श्याम चित्रों की एक श्रृंखला को भी संयोजित किया जा सकता है। मेरे लिए इससे बड़ा सौभाग्य और क्या हो सकता था!

इसी के साथ-साथ जापान के प्रो. हिदेआकि इशिदा जी ने इन कविताओं का जापानी भाषा में अनुवाद करना स्वीकार कर लिया और कुछ ही समय में कविताओं का अनुवाद करके मुझे सौंप दिया।

मैं श्री अशोक भौमिक जी एवं प्रो. हिदेआकि इशिदा जी का हृदय से आभारी हूँ जिनके सद्प्रयासों और सहयोग की परिणति इस पुस्तक के प्रकाशन के रूप में संभव हो सकी है।

आशा करता हूँ कि इन कविताओं के माध्यम से हिरोशिमा की त्रासदी और विनाश के जलते हुए बिंब यदि पाठक के मन में उभरते हैं तो मानवीय करुणा का फलक और अधिक विस्तृत हो सकेगा।

-सुरेश ऋतुपर्ण

序文

ヒロシマの悲劇は我々の文明史における悲劇であり、その記憶は今日も我々を恐怖に陥れる。世界の主要な強国が大量の核兵器を所有している現在、ヒロシマを思い出すことが必要なのは、ヒロシマの戦慄の記憶だけが蛮行の再発を防ぐだろうと思われるからである。少なくともそう期待することはできる。この詩集の五編の詩すべてに不安な気持ちが表現されている。なぜなら、今日の世界は恐怖と暴力の火に常に苦しめられており、たった一つの小さな火花が地球全体の破壊を招きかねないからである。

不思議なご縁があって、これらの詩を冊子にして出版したいという気持ちを高名な画家のアショーク・ボウミク氏にお話したところ、人類の歴史が経験したこの悲劇を白と黒で表現した同氏の一連の作品とこの冊子を組み合わせることができると心安くお話を頂いた。私にとってこれ以上の幸運はあり得ない。

これと共に、日本の石田英明氏に翻訳を引き受けていただき、その成果を託していただいた。

本書の出版がこうして実現したことにつき、私はアショーク・ボウミク氏と石田英明氏のご尽力とご協力に心からの謝意を表したい。

本書の詩によって、ヒロシマの悲劇と破壊の焼けただれたイメージがもし読者の心に浮かび上がるなら、人類の慈悲心はさらに豊かに広がることが可能になると期待しています。

ースレーシュ・リトゥパルナ

अनुक्रम
目次
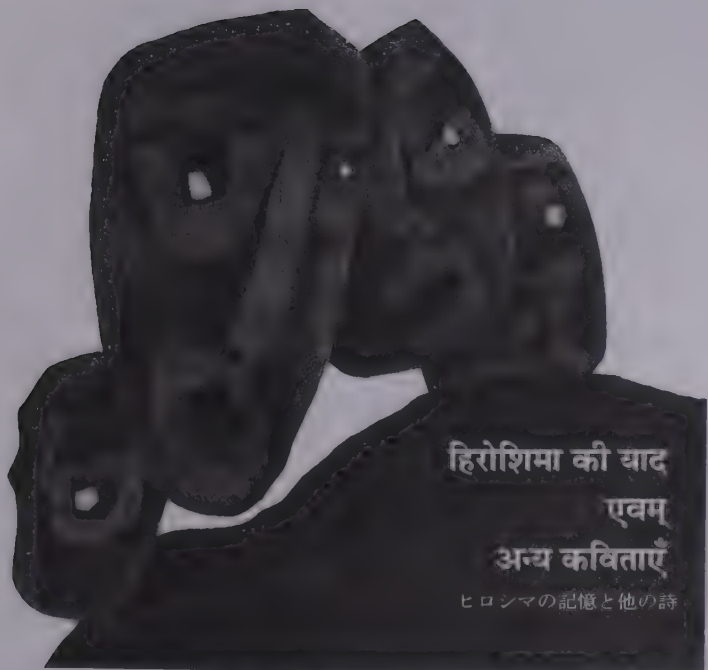
हिरोशिमा की याद
एवम्
अन्य कविताएँ
ヒロシマの記憶と他の詩

हिरोशिमा की याद

बचाए रखना जरूरी है
हिरोशिमा[1] की याद
हिरोशिमा की याद ही रोकेगी
और हिरोशिमा होने से ।

इसलिए कहता हूँ
जले जिस्म पर
फफोलों के निशान
और खोपड़ी से
अचानक उखड़ गए बालों की
तस्वीरों को बार बार दिखाओ

ヒロシマの記憶

残さねばならない
ヒロシマ[1]の記憶
ヒロシマの記憶だけが
新たなヒロシマを阻止する

だからわたしは言う
焼け爛れた体じゅうの
火膨れの痕や
いきなり抜け落ちた
頭髪の写真を
何度も見せよと

उस चमक के बारे में लिखो
जिसने रोशनी नहीं
अँधेरा भर दिया था चारों ओर
उस काली बारिश के
चित्र बनाओ
जिसने खेतों में गेहूँ नहीं
कैंसर के पौधे उगाए थे
उस भट्ठी के बारे में बताओ
जिसके ताप से लोहा पिघल गया

あの閃光について書け
光ではなく
四方を闇に包んだあの閃光を
あの黒い雨の
絵を描け
田畑に食物ではなく
病んだ植物を育てたあの雨を
あの灼熱の炉を語れ
鉄を溶かしたあの灼熱を
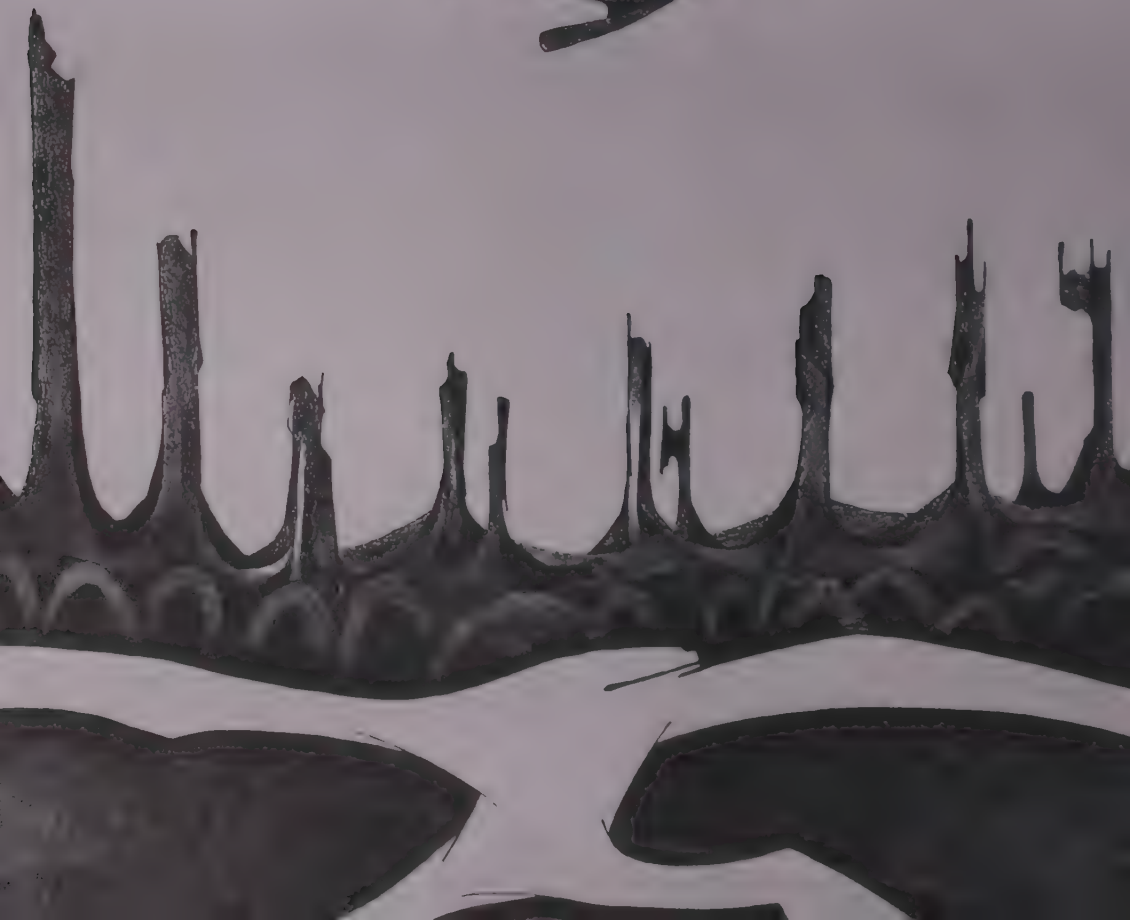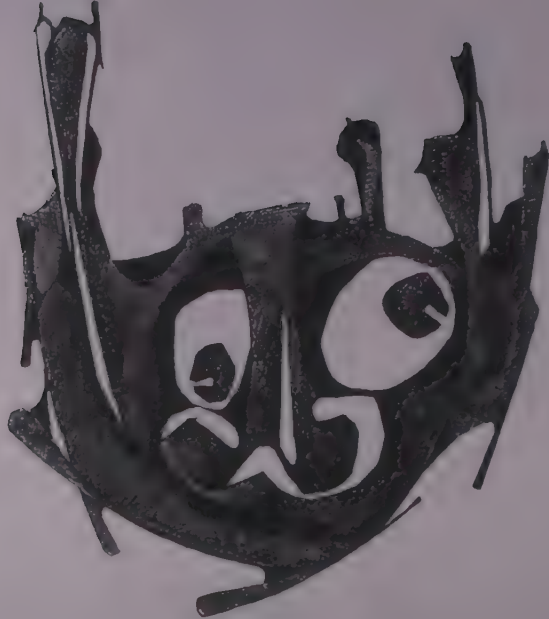
लोग भूलते जा रहे हैं
हिरोशिमा की वह सुबह
जब घड़ी में 8.15 बजे[2] थे
जब आसमान का सूरज
धरती के सूरज से हार गया था

भूलते जा रहे हैं लोग
उस चमक की बात
लाखों भट्ठियों के
एक साथ धधकने की बात
पत्थरों पर छपी
परछाईयों की बात
लोग भूलते जा रहे हैं।

人々は忘れていく
ヒロシマのあの朝
時計が八時十五分[2]を指した時
空の太陽は
大地に出現した太陽に敗れた

人々は忘れていく
あの閃光のことを
幾十万基もの溶鉱炉が
いっせいに燃え上がったことを
石の表面に
影が印刷されてしまったことを
人々は忘れていく

भूलना उनका स्वभाव है!
भूलेंगे नहीं तो
जिन्दा कैसे रहेंगे ?

लेकिन जिन्हें नहीं मालूम
हिरोशिमा का सच
उन्हें कौन बताएगा ?
जब हम नहीं रहेंगे
तब हमारे बे-खबर बच्चों को
कौन समझाएगा
अणुबम की आग का मतलब ?

जल्दी ही हिरोशिमा और नागासाकी
शब्द भर रह जाएंगे
उस महाविनाश का हाल बताने वाला
संजय[3] भी जब चला जाएगा
तब कोई कैसे जानेगा
कैसे बरसी थी आसमान से मौत
और अनगिनत लोग
एक बूँद पानी को तरसते
भाप बन उड़ गए थे।

忘れることは人の性（さが）
忘れなければ
生きてはいけない

しかしヒロシマの真実を
知らぬ人に
誰が語るのか
我々がいなくなったとき
何も知らぬ子供たちに
誰が説明するのか
原爆の火の意味を

ヒロシマもナガサキも
すぐにことばだけに
なってしまうだろう
あの壊滅の様子を物語る
サンジャヤ[3]がいなくなれば
知る術もなくなるのだ
空から死が降り注いだことや
無数の人々が
一滴の水を求めながら
蒸気のように飛び散ったことを
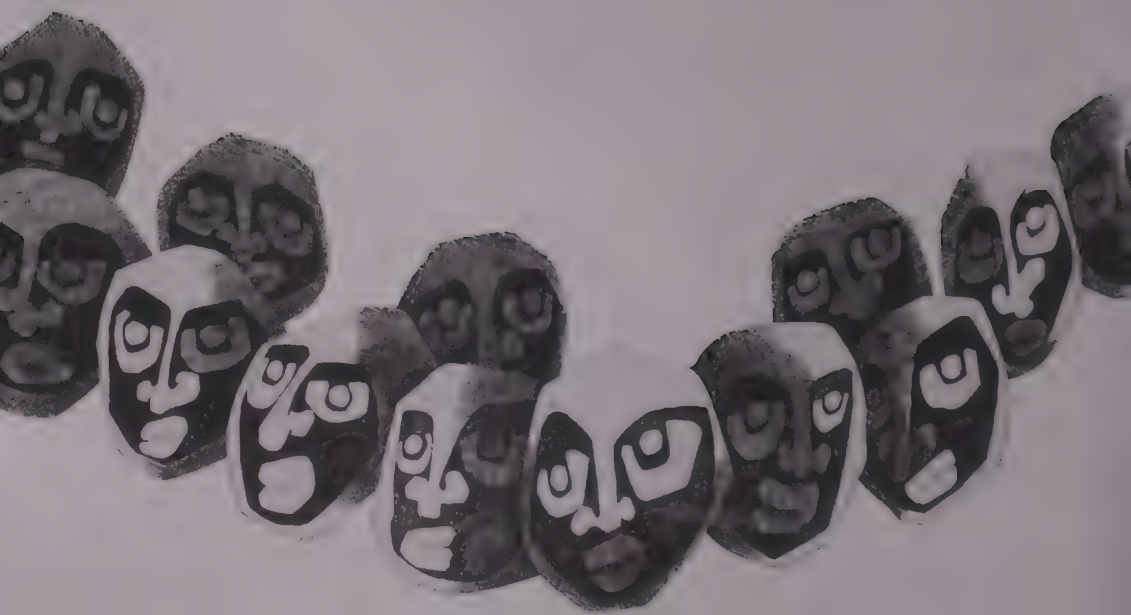
कैसे जान पाएंगे हमारे बच्चे
या बच्चों के बच्चे
कि आज हिरोशिमा की मोतोयासु नदी में
बहती रंग बिरंगी कन्दीलों[4] में
जलती मोमबत्तियों की कांपती लौ
उनके पूर्वजों की ऐंठती देह
की परछाईयां हैं।

इसीलिए कहता हूँ
बचाए रखना जरूरी है
हिरोशिमा की याद
यह याद ही रोकेगी
और हिरोशिमा होने से।

❑

我々の子供たちやその子供たちは
知る術もなくなるのだ
広島の元安川に浮かぶ
色とりどりの流し灯篭[4]の中で
燃える蝋燭の揺れる炎は
祖先の人々の悶え苦しむ
体の影だということを

だからわたしは言う
ヒロシマの記憶は
残さねばならないと
この記憶だけが
新たなヒロシマを阻止できると

❑

एक और मेघदूत

कहीं दूर से
थके चले आते
काले धुएँ के बादल
मुझसे आ लिपट जाते हैं
मेरा चेहरा
भयाक्रांत
सफ़ेद होता जाता है

मुझे लगने लगता है
कालिदास[5] झूँठा था
कैसे ले जाते होंगे
वे काले मेघ
यक्ष[6] का प्रेम संदेशा ?
कि ये काले बादल तो
हर बार
भय का ही संदेशा
लाये हैं मेरे नाम

もう一人の雲の使者

どこか遠くから
疲れてやってきた
黒煙のような雲が
私にまとわりつく
私の顔は
恐怖で
蒼白になる

私は思う
カーリダーサ[5]の詩は嘘だ
この黒雲が
ヤクシャ[6]の愛の便りを
届けるはずがない
この黒い雲は
いつも
恐怖の便りを
私に送りつける

भविष्य का युद्ध
मेरे वर्तमान से आ चिपकता है
मैं देखता हूँ---

युद्धज पीढ़ी की नसों में
भर दिया गया है बारूद
और
फेफड़ों में छिपा दिये गए हैं
एटम बम

न जाने कब
कहाँ से
ऐसा ही कोई काला बादल
उमड़ आयेगा
धुएँ में छिपी
चिनगारी
बारूद में घुस जायेगी
फेफड़ों में छिपे एटम बम
एक-एक कर फूटते जायेंगे।

कहीं कोई नहीं
मैं असहाय......
भयाक्रान्त.........!

❑

未来の戦争が
私の現在にまとわりつく
私には見える ——

戦後世代の血管に
詰め込まれた爆薬
そして
肺に隠されたのは
原子爆弾

いったいいつ
どこから
こんな黒雲が
湧き上がり

黒煙に潜む
火花が
弾薬に入り込み
肺に隠された原子爆弾が
次々に爆発していくだろう

どこにも誰もいない
無力な私は.....
恐怖に震えている.....！

❑

कैसे मर सकती हो
तुम, सदाको !

तुमने जीना चाहा था सदाको[7] !
तुम्हारे दोस्तों ने भी
यही चाहा था कि
तुम्हारी आँखों में पल रहा
जीवन का सपना
सच हो जाए

सभी बना रहे थे
कागज़ की सारसें
जबकि तुम्हारी आँखों की चमक
धुंधलाती जा रही थी

अणुबम के विकिरण से
लगे असाध्य रोग के कारण
हज़ार सारसें[8] बनाते बनाते
तुम गहरी नींद में सो गयीं थीं

君に死はありえないんだ
サダコ！

生きたかったよね、サダコ[7]！
君の友達も
そう願っていたんだ
君の瞳の中で育まれる
命の夢が
叶うようにと

誰もが紙の鶴を
折っているとき
君の瞳は
光を失くしていったんだ

原爆の放射能がもたらした
不治の病のせいで
千羽鶴[8]を折りながら
君は深い眠りに落ちたんだ
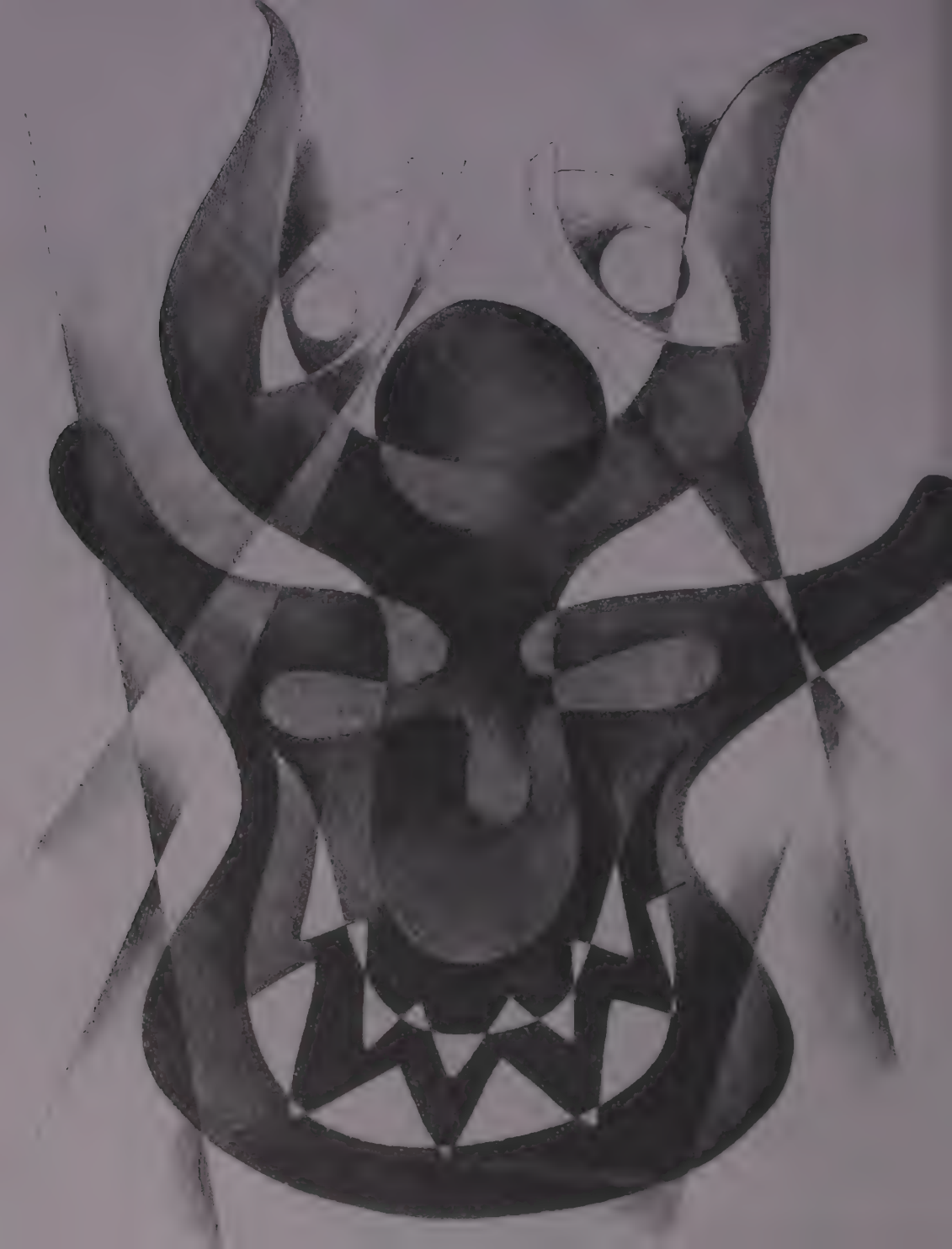
पर तुम्हारे स्मारक पर लटकी
हजारों हजार सारसों की
रंग बिरंगी लड़ियों को देख लगता है-
तुम मर कर भी अमर हो सदाको !

तुम्हारे लिए
दुनिया के करोड़ों बच्चों का दिल
आज भी धड़कता है
विश्व शान्ति के लिए
शान्ति कपोत के पंखों की तरह
हाथ उठाए
खड़ी हो तुम अडिग
कैसे मर सकती हो तुम, सदाको !

□

しかし君の記念碑に掛けられた
色とりどりの幾条もの
千羽鶴を見て思う
君は死んでも不滅なんだ　サダコ！

君を想い
世界中の子供たちは
今も心を痛めているんだ
世界平和のために
平和の鳩の翼のように
両手を上げて
微動だにせず立っている
君に死はありえないんだ　サダコ！

□

नीलकण्ठी हिरोशिमा

अणुबम के ताप में तप कर
कुन्दन बन गयी है तुम्हारी काया
तुम्हारे महाविनाश की तस्वीरों को देख
आज तक बची रह सकी है पृथ्वी
अणुबमों के प्रहार से

तुम्हारे घावों के निशान
बड़े-बड़े तानाशाहों के दुस्साहस को
चुनौती देते हैं।
इसी से बचा है अभी तक
मानव-भविष्य का शिशु

シヴァ神となったヒロシマ

原爆の熱に灼かれ
君の体は純金になった
壊滅した君の写真を見て
原爆の攻撃から
今まで地球は生き延びてきた

君の傷跡が
暴君どもの妄動に
挑み続けたからこそ
未来の子供たちは
今日まで命をつないできた

विश्वयुद्ध के मंथन[9] से
निकला सारा ज़हर
तुम्हारे ही हिस्से आया था
जिसे पी गए थे तुम
शिव[10] की तरह
और विश्व-सभ्यता को
अमृत[11]-दान दे दिया तुमने

एक तुम्हारा नाम ही
बचाता रहेगा आगत-सन्तति को
अणुबम के हलाहल[12] से
जिसे पी कर स्वयं
नीलकण्ठी[13] हो गए हो तुम !

❑

世界大戦の攪拌[9]作用で
出てきたすべての毒を
君は一身に引き受け
シヴァ神[10]のように
毒を飲み干して
世界の文明に
不滅の霊薬[11]を授けた

唯一君の名前だけが
核爆弾の猛毒[12]から
子孫を守り続けるだろう
その猛毒を飲み干して
君はシヴァ神[13]になったのだ！

❑

मेरा अतीत ही है भविष्य मेरा

उस दिन मैंने
हिरोशिमा की मोतोयासु नदी के किनारे
खड़े डोम[14] से पूछा–
एक योगी की तरह ध्यानमग्न
क्या सोचते रहते हो ?

जब सारा शहर और शान्ति स्मारक
हरियाली के कपड़े पहन
इठला रहा है
एक तुम्ही दिगम्बर भिक्षु की तरह
नत शिर खड़े हो।

私の過去こそ私の未来

あの日　私は
ヒロシマの元安川の岸辺に立っている
原爆ドーム[14]に問いかけた ——
修行者のように瞑想して
いつも何を考えているのか？

広島の街も平和公園も
緑におおわれ
すまし顔でいるのに
君一人だけが裸の修行者のように
うなだれて立っている

दर्शकों की भीड़ के सामने
कब तक देते रहोगे गवाही!
कौन जानेगा तुम्हारी अन्तर्ज्वाला का
रहस्य?
असहनीय ताप से पिघली
तुम्हारी लौह बाँहें
आज भी संभाले हुए हैं
तुम्हारी जर्जर काया
महाविस्फोट की प्रलयंकारी गूँज से
क्या तुम भी बहरे हो गये हो?

मैं तुम्हारे ठीक नीचे खड़ा हूँ
और बात करना चाहता हूँ
तुम्हारे गूँगेपन में समायी
उस चीख को सुनना चाहता हूँ
जिसकी अनुगूंज
आज भी तुम्हारे गुम्बद में कैद है।

観光客の人込みを前にして
いつまで証言を続けるのか
君の心の奥の炎の秘密を
誰が知っていよう
灼熱で溶けた
鉄の腕を
今も支える
老いさらばえた君の体
世界を壊滅させる大爆発の轟音で
君も聴力を失ったのか

私は君の真下に立っている
君と話がしたいのだ
君の沈黙に閉じ込められた
叫びを聞きたいのだ
ドームに閉じ込められた
その響きを
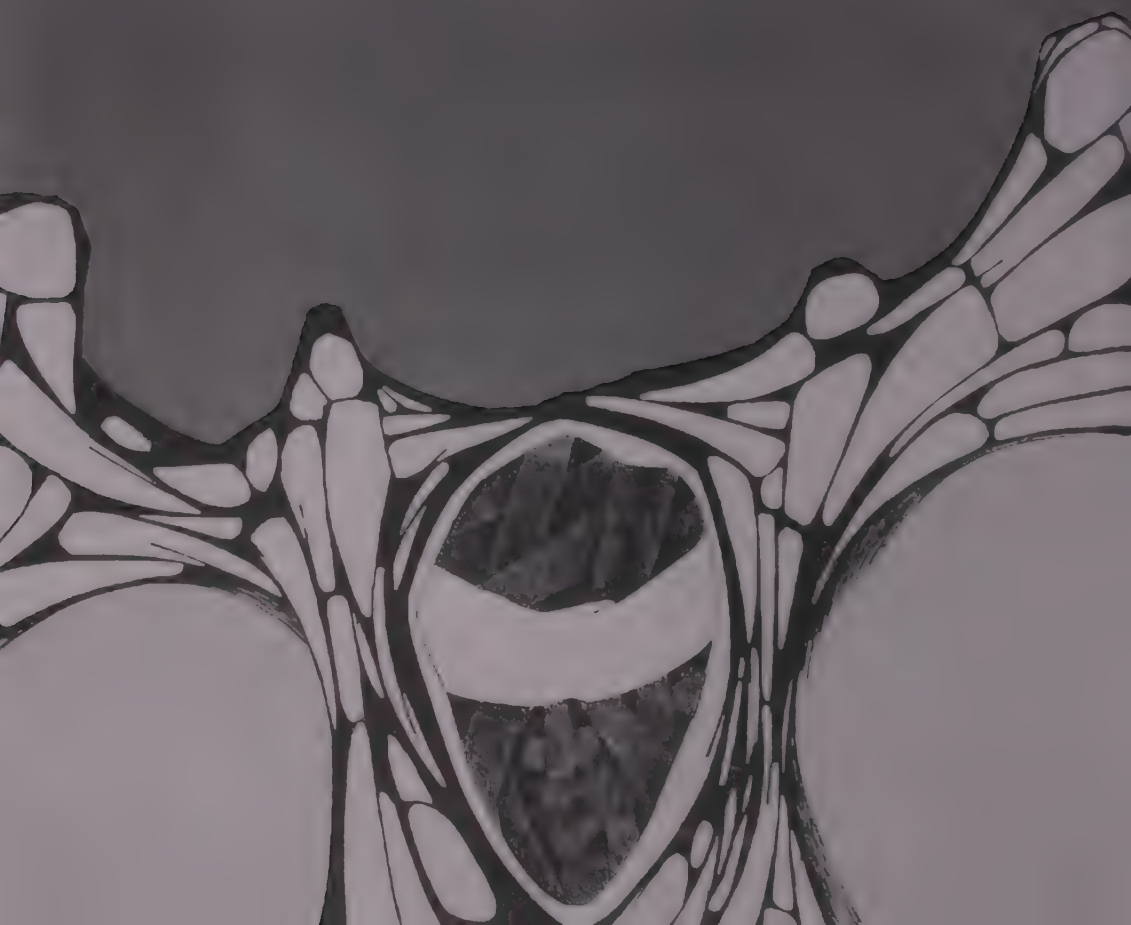
सहसा बोल उठा गुम्बद जैसे
अतल गहराईयों से
टकरा कर लौटती हुई आवाज में
उदास मन कहा उसने-
बुद्ध के देश से आए बन्धु मेरे!

मुझसे अब खड़ा नहीं रहा जाता
सत्तर वर्ष का बूढ़ा हूँ।
किस तरह टेढ़ी-मेढ़ी हो गयी हैं
मेरी लौह बांहें
पैर कांपने लगे हैं
बैसाखियों के सहारे
कब तक खड़ा रह पाऊंगा मैं ?
मुझे अब ढह जाने दो!

突然ドームが声を上げた
底なしの深みから
戻ってくるような
陰鬱な声でドームは言った —
仏陀の国から来たのか、友よ！

わたしはもう立っていられない
七十歳の老人だ
鉄の腕は
ひどく曲がってしまったし
脚も震える
松葉杖に支えられて
いつまで立っていられよう
もう倒れさせてくれ！

ज़िन्दा रहने के लिए भी तो
एक मक़सद चाहिए
हर ओर आतंक ही आतंक है
रोज लड़े जा रहे हैं युद्ध
आदमी मरे अणुबम की आग से
या फिर देसी बम के छर्रों से
क्या फर्क पड़ता है ?
मौत तो मौत है !

उनकी मौत के साथ मरते हैं सपने
सपनों के साथ मरता है भविष्य
अनंत काल से चली आ रही
अत्याचारों की यह परम्परा
क्या कभी रुक पायेगी ?

क्या मेरी गूँगी हिचकियों की आवाज
किसी जिहादी[15] की
लपलपाती आकांक्षाओं पर
अंकुश लगा पायेगी ?

生き続けるにも
目的が要る
どこを見ても恐ろしいことばかり
毎日戦争が行われている
核爆弾の火で死のうと
粗末な爆弾の破片で死のうと
何の違いがあろうか
死は死だ！

人の死とともに夢が死に
夢とともに未来が死ぬ
太古の昔から続いてきた
暴虐の連鎖は
いつか止むのだろうか

言葉にならないわたしの
ためらいがちな声が
狂信的な戦闘員[15]の
燃え盛る野望を
抑え込めるだろうか

बामियान के बुद्ध[16] को
उड़ाने से बेहतर होता
यदि मुझे उड़ा दिया जाता।

प्रतिक्षण होते विनाश को देख
पथरा गयीं हैं मेरी आँखें
मैं अब सोना चाहता हूँ।
चाहता हूँ मिट जाए मेरा होना

मैं चूर-चूर हो
मिट्टी में मिल जाना चाहता हूँ
चाहता हूँ उन्हीं में समा जाना
जिनकी माँस-मज्जा मेरे आसपास की
धरती में समाई है।

バーミヤーンの仏陀[16]を
爆破するぐらいなら
わたしを爆破した方がよかった

刻々生じる破壊を見て
わたしの目は麻痺してしまった
わたしはもう眠りたい
自分の存在自体を消してしまいたい

粉々に砕けて
土に混じってしまいたい
人々の肉や骨が混じり込んだ
わたしの周りの大地に
わたしも吸い込まれてしまいたい

शान्ति पार्क के किनारे खड़ा
कितना अशांत हूँ मैं
कोई–नहीं जानता।
कैमरे की आंख से
देखने वालों की
हृदय की आँख बन्द है।

मैं शापग्रस्त
अपनी क्षत–विक्षत काया लिए
जाने कब तक
यहाँ खड़ा रहूँगा ?

शायद अपराधी हूँ कि
महाविस्फोट का साक्षी बना
और गुमसुम खड़ा
अनगिनत लोगों को
भाप बन उड़ते देखते रहा!

平和公園の一角に立ちながら
こんなに怯えるわたしの気持ちを
知る人はいない
カメラの目を通して
わたしを見る人たちの
心の目は閉じたままである

深い傷だらけの
呪われた体で
わたしはいったい
いつまで立ち続けるのだろう

きっとわたしは罪人なのだ
あの大爆発の目撃者となり
黙って立ちつくしながら
無数の人々が溶けて
飛び散る様子を見ていた

क्या यही है मेरा अपराध ?
और कैसा है यह मुकदमा !
कटघरे में खड़ा
रोज देता हूँ गवाही
हज़ारों-हजार लोगों का
हुज्जूम आता है यहाँ
और चला जाता है
मेरे जीवन की त्रासदी
क्या ओरों के लिए
एक तमाशा भर है ?

ये मानव विरोधी
खुंखार पशु-मानवों की दुनिया
मेरी नुमायश से
बदलने वाली नहीं।
मेरी गवाही से भी
पसीजेगी नहीं उनकी आत्मा
नहीं उठेंगे हाथ
आततायी के विरोध में

これがわたしの罪なのか
これは何という裁判だ
毎日証言台に立ち
ただ証言を繰り返すだけ
何千何万という群衆が
毎日ここを訪れては
去っていく
私の人生の悲劇は
人々には
ただの見世物でしかないのか

人類に敵対する
凶暴な野獣のような人間社会は
わたしが姿を晒すぐらいで
変わるものではない
わたしの証言によっても
彼らの魂が涙もろくなることはない
残虐非道の輩に抗おうと
手が上がることもない

ये मिसाइलें, ये तोप गोले,
यह जमीन पर बिछी बारूदी सुरंगें
ये दिल दहलाने वाले
हवाई हमले
कैसे रुकेंगे ?
आत्मलीन, आत्ममुग्ध लोग
लेते रहेंगे सेल्फी
जो छपती रहेंगी
फेस बुक के पन्नों पर
लाइक-डिसलाइक के
मोहक मायाजाल में
तार-तार होता रहेगा मेरा सच
मेरी पीड़ा, मेरी विवशता !

ミサイル　大砲
地面に埋め込まれた地雷
心を恐怖に突き落とす
空襲
これらに終わりはあるのだろうか
自分に夢中な人々の
自画像写真は
フェイスブックの画面を飾り続け
いいねボタンとだめねボタンが
織り成す魅惑の世界は
無力なわたしの苦しみと
私の真実を
ずたずたに引き裂くだろう
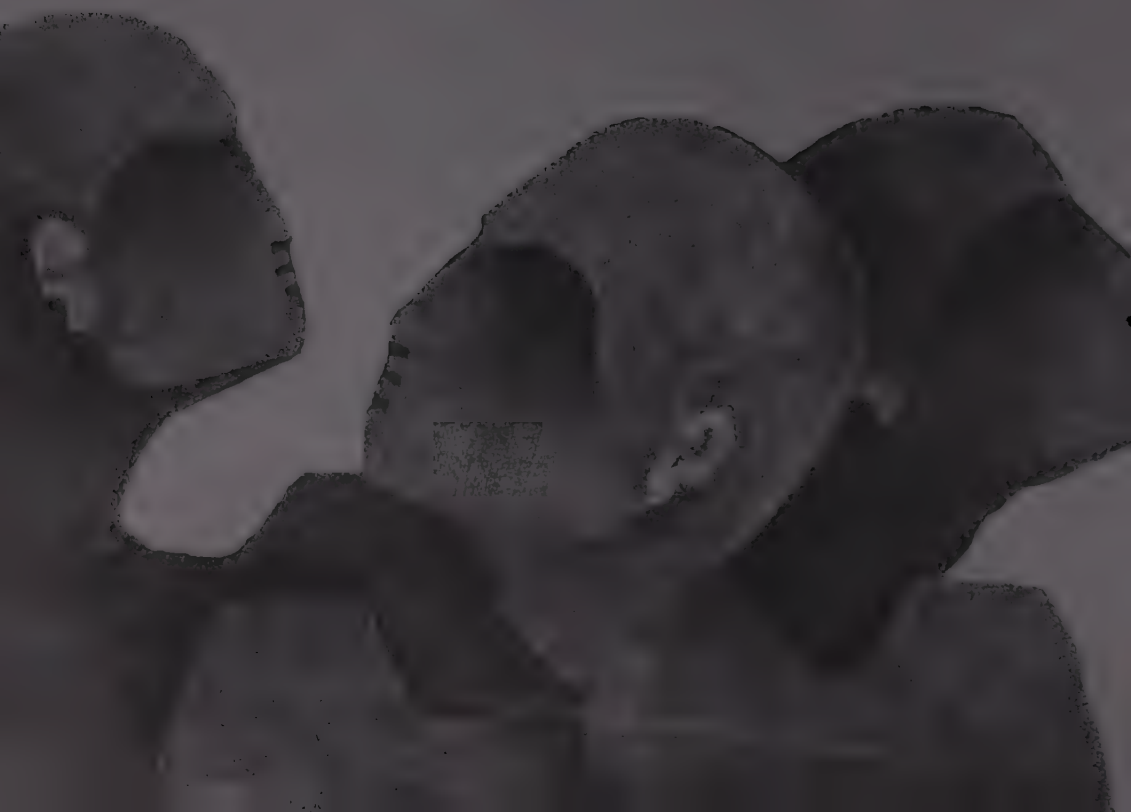
मैं पूछना चाहता हूँ सबसे
क्या मेरी मौन चीख
सुनी है आपने ?
मानव-भविष्य की चिन्ता में
कण-कण बिखरती
मेरी काया का क्षरण
तुमने देखा है ?

मैं जानता हूँ
तुम भी उन्हीं में से एक हो
हजारों, लाखों, करोड़ों की भीड़ में खड़े
स्वार्थी, कायर, अवसरवादी
दूसरों की चिताओं पर
रोटियाँ सेकने वाले
मेरे चित्रों की ओट में
बखानोगे अपनी यात्रा का रोमांच
सचित्र कहानी छाप
विश्वयात्री होने के गर्व से इठलाओगे
पावर-प्रेजेन्टेशन में
आँकड़ों सहित
खींचोगे मेरे महाविनाश का खाका ?

すべての人にわたしは尋ねたい
わたしの無言の叫び声を
聞いたことがありますか
人類の未来を案じながら
刻々衰弱し
崩壊していくわたしの体を
見たことがありますか

わたしは知っている
あなたもあの何千何十万
何千万という群衆の一人だ
利己的で臆病で日和見主義で
人の不幸に便乗して
わたしの写真を使い
旅行の魅力を得々と語り
絵本でよく見る世界旅行家よろしく
気取って振る舞うのでしょう
パワーポイントで
数値を示しながら
わたしの破壊の概略を解説するのでしょう

क्या इसमें जिक्र होगा
मेरी मर्मान्तक पीड़ा का ?
प्रतिपल नर्क होती जा रही

दुनिया को बदलने का
कोई सपना होगा
या फिर
तटस्थ और गुट निरपेक्ष होने का
ढोंग रचोगे

विकल्पों की कीचड़ में
आकंठ डूबते-उतराते
कभी अपनी सुविधाओं को
छोड़ भी पाओगे ?
बेहद लच्छेदार भाषा के इन्द्रजाल से
तिलिस्मी आभा मंडल रच
पुरस्कार और सम्मानों से
नहीं लद जाआगे ?

その解説の中に
刻々地獄に変わっていくわたしの
心の奥の苦悩が示されるのでしょうか

世界を変える夢が
示されるのでしょうか
それとも
傍観者的中立という
猿芝居が演じられるのでしょうか

いくつものうまい話という泥沼に
どっぷり首までつかりながら
自分の既得権益を
手放すことができますか
美辞麗句をちりばめた
魔法のようなライトを浴びながら
数々の賞や名誉に
押し潰されはしませんか

जानता हूँ वर्षों तक
मेरे ही कन्धे पर बंदूक रख
शान्ति-शान्ति चिल्लाते तुम
सफेद कपोत उड़ाओगे

सच कहता हूँ--
कपोतों की फड़फड़ाहट सुन
मेरी रूह काँपती है।
मैने देखा है सत्तर साल पहले
6अगस्त के दिन
लाखों आत्माओं को
कपोतों की तरह
फड़फड़ाकर उड़ते हुए

प्रत्यक्षदर्शी हूँ उनके
असमय अवसान का
भोक्ता भी हूँ उस आणविक आग का
जिसके फफोलों के घाव
मेरी दीवारों के
उखड़े पलस्तर के पीछे
आज भी उभर आते हैं

この先何年も
わたしの肩に銃を載せ
平和　平和と叫びながら
あなたは白い鳩を飛ばすのでしょう

本当のことを言おう——
鳩の羽ばたきを聞くと
わたしの魂は震え上がる
七十年前の
八月六日
何十万もの魂が
鳩のように羽ばたき
飛び去っていくのを見た

わたしは人々の不意の終末の
目撃者だ
原爆の火の体験者だ
火傷でできた水泡の傷痕が
わたしの壁の
はがれた漆喰の裏に
今日も姿を覗かせている

भोगा हुआ यथार्थ
बघारते रहे तुम जीवन–भर
और मैंने जो भोगा है
कौन सा यथार्थ है वह ?

मेरे सामने फैले
शान्ति स्मारक के मध्य
जलती रहती है आग की लौ
मेरे ही सामने
दोनों हाथ उठाए
खड़ी है सदाको[7]
जिसकी मासूम निगाहों में
पूरी ज़िन्दगी जीने की तमन्ना
डबडबाती थी
जो आखिरी सांस तक
बनाती रही कागज़ी सारस[8]
कि दिए की लौ सी काँपती
आगत मृत्यु की सम्भावना
कहीं दूर चली जाए

体験した現実とやらを
あなたは生涯ひけらかしているが
わたしが体験したもの
あれはどんな現実なのか

私の目の前に広がる
平和公園の真ん中に
灯火が燃え続けている
わたしのすぐ前には
両手を上げた
貞子像が立っている
彼女の無垢な眼差しには
人生をすべて生き抜くという
願いが輝いていた
灯火の炎のように
震えながら近づく死の
可能性が遠のいてくれるようにと
息の続くかぎり
彼女は鶴を折り続けていた

सच कहूँ !
मुझसे ज्यादा भाग्यवान थी वह
मरते–मरते
जीने का पाठ पढ़ा गयी आगत पीढ़ी को
उसकी याद में
दूर देशों में बैठे बच्चे
कागज़ी सारसों की माला बनाते हैं
और श्रद्धा के साथ
चढ़ा जाते हैं
उसके स्मारक पर ।

नहला देते हैं
अमरता के रंगों से
उसकी याद को ।
और मैं यहाँ दूर खड़ा
उन रंगों की आभा को
ललक भरी निगाहों से
निहारता रहता हूँ।

本当のことを言おう！
わたしより彼女の方が幸せだった
死を前にして
未来の世代に命の教えを残したのだから
彼女を想って
遠い外国の子供たちは
千羽鶴を折り
敬意を込めて
彼女の記念碑に
捧げる

彼女の記憶を
不滅の絵の具で
あざやかに蘇らせる
わたしはここに離れて立ち
絵の具の放つ光を
物欲しげな視線で
見詰めるだけだ

हर साल आने वाली
छह अगस्त
मेरे घाव हरे कर जाती है
मेरे सामने बहती
नदी की छाती पर
शाम होते ही
तैरने लगती हैं
बेशुमार जलती कन्दीलें[4]
कि जिनकी रंग-बिरंगी
परछाईयों को
नदी की मासूम लहरें
हल्के-हल्के थपथपाती हैं

मेरा मन छटपटाता है
काश ! मेरी परछाई भी
जलती कन्दील की तरह
बहती चली जाती
नदी की थपकी देती
लहरों की लोरी सुन
कुछ देर के लिए मैं भी सो पाता
तिरता चला जाता
सागर की ओर
फिर अनंत में मिल जाता !
काश ! कि ऐसा हो पाता ?

毎年やってくる
八月六日は
私の古傷をまた生傷に変えてしまう
わたしの前を流れる
川面に
夕闇が迫ると
無数の流し灯篭に
火が入り
色とりどりの
影を映した
川面を
さざ波がやさしく打つ

わたしはいたたまれなくなる
私が落とす影も
流し灯篭のように
流れ去ってしまえばいいのに
川面をやさしく打つさざ波の
子守唄を聞きながら
しばしのまどろみを得て
海へとただよい
流れ去り
やがて無窮と一体になる
そんなふうになればいいのに

मैं जानता हूँ।
अपने अतीत से मुक्ति पाना
इतना आसान नहीं होता
और मेरा दुर्भाग्य तो यह भी है
कि मेरा कोई वर्तमान नहीं

मुझे तो ऐसे ही
जड़ बने रहकर वर्तमान में
दृश्यता देनी है।
अतीत को

ओ मेरे दर्शक मित्र !
जानता हूँ जल्दी में हो तुम
और भी बहुत से आकर्षण हैं यहाँ
जिन्हें तुम
अपने कैमरे में बंद करना चाहते हो

बार-बार घड़ी की ओर देखते हुए
मन ही मन
कोस रहे होगे मुझे शायद
थक भी गए होगे
मुझ बूढ़े की राम कहानी सुनते सुनते !

自分の過去から自由になることが
容易でないことは
分かっている
しかも不幸なことにわたしには
今現在といえる時間もない

わたしはこんなふうに
虚しい心のまま存続し
過去の光景を
蘇らせているばかりだ

観光中の友よ！
あなたがお急ぎであること
他にも写真におさめたい
名所がたくさんあることは
承知しています

何度も腕時計に目をやりながら
心の中で
わたしを罵っているのでしょう
年老いたわたしの繰り言を聞かされ
疲れ果てたことでしょう！
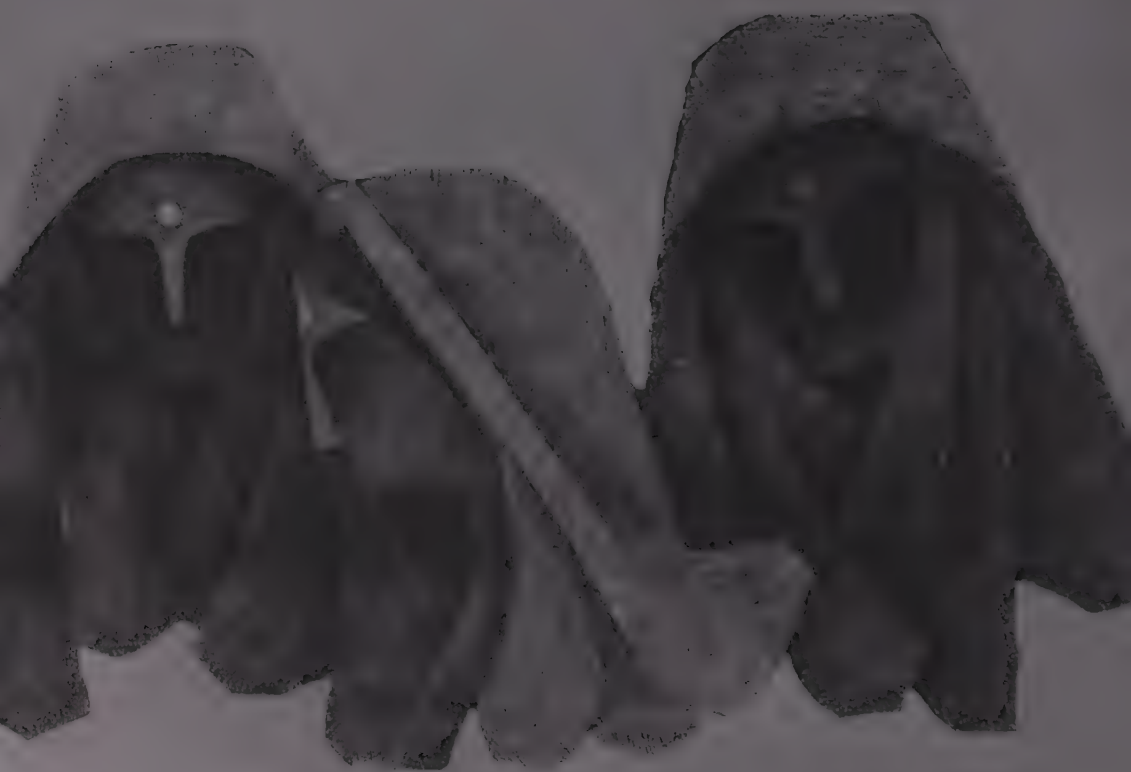
ओ दूर देश के साथी !
तुम्हारी आंखों में
जाने क्या देख लिया मैंने
कि रोक नहीं पाया अपने को
जैसे जल प्लावन के बाद
टूट जाते हैं बाँध
झंझावातों में फट जाते हैं
नौकाओं के पाल
टूट जाते हैं मस्तूल
आंधियों की चपेट में आ
उखड़ जाते हैं
छतनार वृक्ष

जैसे मासूम बच्चे की मौत पर
छाती पीटती है अभागी माँ
जैसे सूखे में फट जाती है धरती
गर्म हवाओं की रगड़ से
भड़क उठती है
जंगल में आग

遠い異国の友よ！
あなたの瞳に
わたしは一体何を見たのだろう
自分が抑えきれなくなった
まるで洪水の中で
堤が切れるように
嵐の中で
船の帆が破れ
マストが折れるように
嵐に巻き込まれて
枝を広げた大木が
根こそぎになるように

いたいけな子供を死なせた悲しみに
胸を叩く不幸な母親のように
日照りにひび割れた大地のように
熱風にあおられ
大火事になった
ジャングルのように

नींद में बुरा सपना देख
सुबक-सुबक रो उठती है
डरी हुई बच्ची
कुछ ऐसे ही
मेरी पोर-पोर में
बर्फ बन सोई रुलाई
चीख बन टकराती घूम रही है
गुम्बद की गोलाई में
जिसे केवल मैं ही सुन पाता हूँ।

क्षमा चाहता हूँ
पल भर के साथी !
तुम्हारी आंखों में तैरती
आँसू की एक बूँद देख
विगलित हो गया अन्तर मेरा
जाने कब का ठहरा बादल
मानवीय उष्मा पा बरस गया

悪夢にうなされ
恐怖の中で泣きながら目覚める
幼い少女
まるでそんなふうに
わたしの体じゅうの節々に
氷の塊のように眠っていた嗚咽が
叫喚となって
円形のドームに響くこだまを
聴き取れるのはわたしだけ

ごめんなさいね
観光中の束の間の友よ！
あなたの目に
一粒の涙を見て
わたしの頑なな心が崩れたのです
長い間微動だにしなかった雲が
人の温かみに接して雨に変わったのです
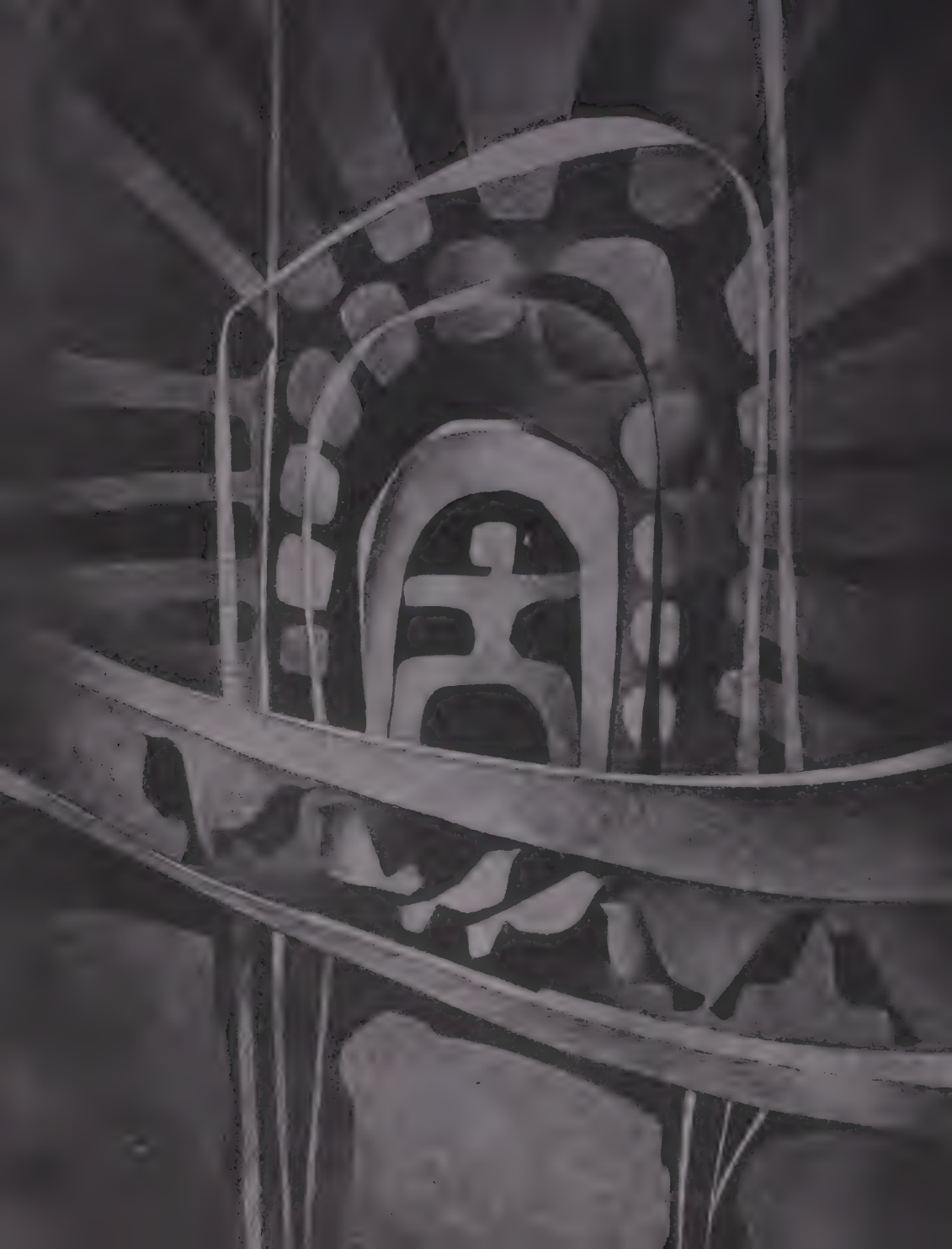
मित्र मेरे !
तुम क्या जानो
आज अचानक मुझमें
कैसा अघट-घट गया है
रूई सा हलका हो गया हूँ
तुम्हारी मौन सहानुभूति के स्पर्श मात्र से
मेरा अहिल्या[17] सा जड़-जीवन
स्पन्दन से भर गया है
पत्थर सी निरर्थक काया को
एक नया जीवन संदेश मिला है

आज जाना है मैंने
अतीत के बिना
कोई वर्तमान भी नहीं होता
और भविष्य
वर्तमान की गोद में ही खेलता है
आज जाना है मैंने
मेरा अतीत ही
भविष्य है मेरा।

❑

友よ！
あなたには分からないでしょう
今日いきなりわたしの心に
どんな奇跡が起こったのか
わたしは綿のように軽くなった
あなたの無言の思いやりに
触れただけで
アヒリャー[17]のように麻痺していた
わたしの日常に
命の鼓動が広がり
石のように意味を失くしていた体に
新しい命のメッセージが届いた

今日わたしは理解した
過去がなければ
いかなる現在もないことを
そして未来は
現在の懐でたわむれていることを
今日わたしは理解した
わたしの過去こそ
わたしの未来なのだ

❑

परिशिष्ट

補遺

टिप्पणियाँ

1. हिरोशिमा : जापान का एक प्रसिद्ध शहर जिस पर द्वितीय विश्वयुद्ध के अन्तिम दिनों में 6 अगस्त, 1945 को अमरीकी सेना द्वारा दुनिया के पहले अणुबम का विस्फोट किया गया था और कुछ ही मिनटों में पूरा शहर जल कर राख हो गया।

2. 8.15 बजे : यह अणुबम सुबह ठीक 8 बजकर 15 मिनट पर गिराया गया था। हिरोशिमा के संग्रहालय में ऐसी कई घड़ियाँ रखी हैं जो विस्फोट के प्रभाव से 8.15 बजे बन्द हो गयीं थीं।

3. संजय : महाभारत का एक पौराणिक पात्र जिसे ऐसी दूरदृष्टि का वरदान प्राप्त था कि वह महाभारत के युद्धस्थल कुरूक्षेत्र से बहुत दूर हस्तिनापुर में बैठा हुआ अंधे सम्राट धृष्टराष्ट्र को कुरूक्षेत्र में होने वाले युद्ध का आँखों-देखा हाल सुनाता था।

4. कंदील : बाँस की खपच्चियों और रंगीन कागजों से बनी ऐसी जापानी लालटेन जिसमें जलती हुई मोमबत्तियाँ लगाकर उन्हें नदियों में बहाया जाता है। यह एक प्रकार से मृतात्माओं की शान्ति के लिए श्रद्धांजलि स्वरूप बहायी जाती हैं।

5. कालिदास : संस्कृत भाषा के महान कवि थे। आपकी विश्व प्रसिद्ध रचनाओं में 'अभिज्ञान शाकुन्तलम्' का नाम सर्वाधिक प्रसिद्ध है तथा विश्व की अनेक भाषाओं में इसके अनुवाद हुए हैं। 'मेघदूत' भी आपकी एक अन्य प्रसिद्ध रचना है।

6. यक्ष : कालिदास रचित 'मेघदूत' नामक काव्य का नायक। यक्ष को उसके स्वामी कुबेर ने देश निकाला दे दिया और वह अपनी प्रिया से बहुत दूर चला गया था। यक्ष विरह व्याकुल होकर आषाढ़ के मेघों के माध्यम से, उन्हें अपना दूत बना कर, अपनी प्रिया यक्षिणी को प्रेम-संदेश भेजता है।

7. सदाको ससाकी : 7 जनवरी, 1943 के दिन हिरोशिमा में जन्मी सदाको ससाकी नाम की एक बालिका थी। 6 अगस्त, 1945 के दिन जब हिरोशिमा पर एटम बम का विस्फोट हुआ तो यह दो वर्षीय बच्ची अपने घर के नजदीक ही विकिरण की शिकार हो गयी और 25 अक्टूबर, 1955 में उसकी अकाल-मृत्यु हो गयी। कैंसर ग्रस्त यह बच्ची अपने कैंसर के रोग से निरन्तर संघर्ष करती रही तथा मृत्युपर्यन्त कागजी सारसें बनाती रही क्योंकि जापानी मान्यता के अनुसार यदि कोई 1000 सारस बना ले तो उसकी मृत्यु नहीं हो सकती। सदाको की मृत्यु के

बाद उसके सहपाठियों ने एक मुहिम चलाई कि उसका एक स्मारक बनाया जाये । सन् 1958 में हिरोशिमा शान्ति स्मारक उद्यान में उसकी स्मृति में एक स्मारक बना दिया गया । उसकी स्मृति में आज वहाँ दुनियाभर के बच्चे रंग-बिरंगे कागज़ों की सारसों की मालाएँ अर्पित करके उसे श्रद्धांजलि देते हैं।

8. हज़ार सारसें : जापानी मान्यता के अनुसार यदि कोई व्यक्ति 1000 काग़जी सारसें बना ले तो उसकी आसन्न मृत्यु दूर चली जाती है। जापान में सारस दीर्घायु का प्रतीक है।

9. मंथन : समुद्र मंथन की कथा एक हिन्दू पौराणिक कथा है। यह कथा भागवत पुराण सहित कई पुराणों में आती है। एक बार देवताओं और दैत्यों ने समुद्र मंथन किया ताकि अमृत प्राप्त करके सभी अमर हो जायें। उस मंथन से सबसे पहले हलाहल नामक विष निकला जिसे महादेव ने अपने कण्ठ में रख लिया और जिसके प्रभाव से उनका कण्ठ नीला हो गया। फलत: महादेव का एक नाम नीलकण्ठी भी हो गया।

10. शिव : भारत की पौराणिक मान्यताओं के अनुसार ब्रह्मा, विष्णु, महेश की त्रिमूर्ति में महेश के अनेक नाम हैं। इन्हें महादेव भी कहा जाता है। शिवत्व के देवता होने के कारण इन्हें शिव भी कहा जाता है। शिव कल्याण के देवता हैं।

11. अमृत : समुद्र मंथन से प्राप्त 14 वस्तुओं में से एक पदार्थ अमृत था। पौराणिक मान्यता है कि अमृत-पान करने के बाद व्यक्ति अमर हो जाता है।

12. हलाहल : भारत की पौराणिक मान्यताओं के अनुसार एक बार सुर एवं असुरों ने समुद्र का मंथन कर डाला। इस मंथन से उन्हें 14 वस्तुएँ प्राप्त हुईं। इसमें श्रेष्ठ पदार्थ अमृत और निकष्टतम पदार्थ हलाहल था। आज की परिस्थितियों में इस प्रतीक को समझें तो हम कह सकते हैं कि अमृत है परमाणु-ऊर्जा और हलाहल है उसके रियक्टरों से निकलने वाला अवशिष्ट पदार्थ (*Nuclear Waste*) जो अन्यन्त घातक और विनाशकारी होता है ।

13. नीलकण्ठी : भारतीय पौराणिक कथा के अनुसार सुर एवं असुरों के द्वारा समुद्र-मंथन के बाद उसमें से जो 14 वस्तुएँ निकलीं उनमें अमृत और विष भी था। यही विष हलाहल कहलाया। यह विष इतना तेज था कि पूरी मानवता ही समाप्त हो जाय। ऐसे में मंगल मूर्ति भगवान शिव ने उसे अपने कण्ठ में धारण कर लिया जिसके कारण उनके कण्ठ का रंग नीला पड़ गया। उनके कण्ठ के इस नीले रंग के कारण ही उनका एक नाम नीलकण्ठी शिव पड़ गया ।

14. डोम : हिरोशिमा स्थित 'प्रीफैक्चरल इंडस्ट्रीयल प्रमोशन हॉल' के क्षत-विक्षत भवन का गुम्बद जो 6 अगस्त, 1945 को अणुबम विस्फोट का साक्षी बना। इस भवन का अधिकांश

हिस्सा विस्फोट के कारण नष्ट हो गया था लेकिन जापानी सरकार ने शान्ति पार्क के एक कोने में इस डोम को ऐसे ही खड़े रहने दिया ताकि अणुबम-विस्फोट की विभीषिका का एक चिह्न बचा रहे। इसे सन् 1996 में यूनेस्को ने वर्ड हैरीटेज की सूची में सम्मिलित किया है।

15. जिहादी : धर्मयुद्ध करने वाला। वर्तमान संदर्भ में इसका अर्थ धार्मिक उन्माद में आतंक फैलाने वाले व्यक्ति से लिया जाने लगा है।

16. बामियान के बुद्ध : मध्य अफगानिस्तान में काबुल के उत्तर-पश्चिम में बामियान घाटी में चौथी-पाँचवीं शताब्दी में चट्टानों को काटकर बनायी गयी बुद्ध की अत्यन्त विशाल मूर्ति जिसे सन् 2001 में तालिबानों ने नष्ट कर दिया ।

17. अहिल्या : रामायण से जुड़ी एक ऐसी पौराणिक कथा जिसमें गौतम ऋषि की शापग्रस्त पत्नी अहिल्या का श्रीराम द्वारा उद्धार चित्रित किया गया है। कथा है कि अहिल्या को दोषी मानकर गौतम ऋषि ने उसे पाषाण प्रतिमा हो जाने का शाप दे दिया था।

訳注

1．**広島：** 日本の有名な都市。第二次世界大戦末の1945年8月6日、アメリカ軍により世界で初めて原子爆弾が投下され、数分のうちに全市が灰燼に帰した。

2．**8時15分：** この原子爆弾は8時15分に投下された。広島の原爆資料館には爆発により8時15分で止まった時計がいくつか展示されている。

3．**サンジャヤ：** 『マハーバーラタ』の登場人物。遠隔地の光景が眼前に見えるという恩恵を授かっていて、戦場であるクルクシェートラから遥か遠く離れた都ハスティナープラの王宮にいる盲目のドゥリタラーシュトラ王に戦争の実況を語って聞かせた。

4．**流し灯籠：** 竹ひごと色紙で作る日本式提灯で、中の蝋燭を灯して川に流す。故人への慰霊として流される。

5．**カーリダーサ：** サンスクリット語の偉大な詩人。世界的に有名な戯曲『シャクンタラー』は彼の作品の中で最も有名であり、世界の多くの言語に翻訳されている。『雲の使者』もカーリダーサのもう一つの有名な作品である。

6．**ヤクシャ：** カーリダーサ作の長編詩『雲の使者』の主人公。ヤクシャは主人のクベーラにより遠い南の地に追放の処分を受けている。妻との別離を悲しむヤクシャは北上するモンスーンの雲を使者と頼み、北国にいる妻へ愛の言葉を送る。

7．**佐々木禎子：** 1943年1月7日広島市に生まれたこの少女は2歳の時、1945年8月6日に広島に落とされた原爆により自宅付近で被爆し、1955年8月25日に急逝した。白血病に侵された禎子は病気と闘い続け、死を迎えるまで折鶴を折り続けた。それは千羽の鶴を折れ

ば、死を遠ざけることができると聞いていたからである。禎子の死後、級友たちは彼女の像の建設のため募金活動を行った。1958年、広島平和記念公園に彼女の像が建てられた。彼女への追憶として、今では世界中の子供たちが様々な色の折鶴を捧げ、彼女の冥福を祈っている。

8．**千羽鶴：**　日本では千羽の紙の鶴を折れば、その人の死を遠ざけることができると思われている。鶴は長寿の象徴とされている。

9．**乳海攪拌：**　乳海攪拌はヒンドゥー教神話の一つである。この物語は『バーグワタ・プラーナ』他いくつかの神話物語集に出てくる。ある時、神々と悪魔たちが不老不死の霊薬アムリタを手に入れようと乳海を攪拌した。この攪拌によって最初にハラーハラという猛毒が出現し、それをシヴァ神が飲んで首のところで留めた。そのために彼の首は青くなり、それを意味するニールカンタが彼の別名にもなった。

10. **シヴァ神：**　インドの神話によると、ブラフマー、ヴィシュヌ、マヘーシュの三大神のうち、マヘーシュにはたくさんの別名があり、マハーデーヴとも呼ばれる。シヴァ性つまり吉兆の神であるのでシヴァとも言われる。シヴァは安寧の神である。

11. **アムリタ：**　乳海攪拌で出現した14のものの一つ。神話ではアムリタを飲むと人は不死になるとされている。不老不死の霊薬、甘露。

12. **ハラーハラ：**　神話によると、ある時、神々と悪魔たちが乳海を攪拌した。これにより、14のものが出現した。その中で最高のものがアムリタであり、最悪のものがハラーハラであった。今日の状況下でこの象徴的な意味を考えると、アムリタとは原子力エネルギーであり、ハラーハラとは原子炉から出る非常に危険で破壊力の強い核廃棄物ということができる。

13. **青首のシヴァ神：**　インドの神話によると、神々と悪魔たちが乳海を攪拌した時、14のものが出現し、その中に霊薬アムリタと猛毒もあった。この猛毒をハラーハラという。これは人類が全滅するほどの猛毒であった。そこで安寧の象徴であるシヴァ神がその猛

毒を飲んで首に留めたので、彼の首が青くなった。そういう訳で青首のシヴァ神という名がついた。

14. **原爆ドーム：**　広島市にあった広島県産業奨励館の廃墟となった建物の天井のドーム。1945年8月6日の原爆投下の証人とも言うべき存在になった。この建物の大部分は爆発により破壊されてしまったが、日本政府は原子爆弾の悲惨さの象徴となるようにと、このドームをそのまま残したのだった。1996年、ユネスコはこれを世界遺産として登録した。

15. **聖戦の戦闘員：**　聖戦を戦う戦闘員。現在この語は宗教的な狂信からテロを行う者という意味で使われている。

16. **バーミヤーンの仏陀：**　4－5世紀頃、アフガニスタンのカーブル北西にあるバーミヤーン渓谷の岩山に彫り込んで作られた巨大な石仏像。2001年、ターリバーンが破壊した。

17. **アヒリャー：**　『ラーマーヤナ』に関連した神話で、聖仙ガウタマの呪いを受けたその妻アヒリャーがラーマにより救われる様子が描かれている。物語ではアヒリャーの貞節に問題ありとした聖仙ガウタマが彼女に呪いをかけ岩の像に変えてしまう

सुरेश ऋतुपर्ण
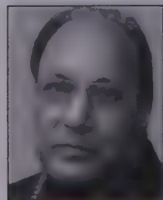
12 जुलाई, 1949 को मथुरा में जन्मे डॉ. सुरेश ऋतुपर्ण ने दिल्ली विश्वविद्यालय से हिन्दी साहित्य में एम.ए., एम. लिट्. एवं पी-एच.डी. की उपाधि प्राप्त की। 'नई कविता में नाटकीय तत्व' विषय पर शोध कार्य किया।

सन् 1971 से सन् 2002 तक दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रतिष्ठित शिक्षा-संस्थान हिन्दू कॉलेज में अध्यापन कार्य। सन् 1988से 1992 तक ट्रिनीडाड एवं टुबैगो स्थित भारतीय हाई कमीशन में एक राजनयिक के रूप में प्रतिनियुक्ति। सन् 1999 से 2002 तक मॉरीशस स्थित महात्मा गांधी संस्थान में 'जवाहर लाल नेहरू चेयर ऑफ इंडियन स्टडीज' पर अतिथि आचार्य के रूप में कार्य। सन् 2002 से 2012 तक जापान की प्रसिद्ध 'तोक्यो यूनीवर्सिटी ऑफ फॉरेन स्टडीज' में प्रोफेसर के रूप में कार्य तथा वहीं से सेवा निवृत्त।

'मुक्तिबोध की काव्य सृष्टि', 'हिन्दी की विश्व यात्रा', 'हिन्दी सब संसार', 'अकेली गौरैया देख', 'ये मेरे कामकाजी शब्द' 'जापान के क्षितिज पर रचना का इन्द्रधनुष', 'जापान की लोक-कथाएँ', 'नई कविता में नाटकीय-तत्त्व', 'दक्षिण पूर्व एशिया के देशों में हिन्दी शिक्षण', 'फ़ादर कामिल बुल्के : भारतीयता के प्रकाश-पुंज' सहित कई पुस्तकें प्रकाशित। 'जापान में हिन्दी शिक्षण की परम्परा' एवं 'इक्कीस जापानी लोक-कथाएँ' शीघ्र प्रकाश्य।

जापान में तीन अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी सम्मेलनों का आयोजन एवं संयोजन (2006, 2008 एवं 2012) अनेक राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनों, सेमिनारों एवं कार्यशालाओं में सक्रिय भागीदारी

सन् 1980 में प्रथम कविता संग्रह 'अकेली गौरैया देख' प्रकाशित एवं उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान द्वारा पुरस्कृत। अमेरिका, जापान, कनाडा, ट्रिनीडाड, सूरीनाम, गयाना, फीजी, मॉरीशस, फ्रांस, जर्मनी, इटली आदि के अतिरिक्त यूरोप के अनेक देशों की यात्राएं एवं दीर्घ प्रवास।

'विश्व हिन्दी न्यास' (न्यूयार्क, अमेरिका) के अंतर्राष्ट्रीय समन्वयक एवं त्रैमासिक पत्रिका 'हिन्दी जगत' के संपादक। विदेशों में प्रचार-प्रसार के कार्य के लिए 'भारतीय विद्या संस्थान', ट्रिनीडाड द्वारा 'ट्रिनीडाड हिन्दी भूषण सम्मान' हिन्दी फाउंडेशन ऑफ ट्रिनीडाड एवं टुबैगो द्वारा 'हिन्दी निधि सम्मान' एवं उ.प्र. संस्थान द्वारा वर्ष 2004 में 'विदेश हिन्दी प्रसार सम्मान', फादर कामिल बुल्के सम्मान, (इलाहाबाद 2006), सरस्वती साहित्य सम्मान, (इलाहाबाद 2009), हिन्दी-उर्दू साहित्य अवार्ड समिति लखनऊ द्वारा, 'साहित्य-शिरोमणि सम्मान' (2016) से सम्मानित।

संप्रति : निदेशक, के.के. बिड़ला फाउंडेशन, नई दिल्ली। Email . rituparna.suresh@gmail.com

हिदेआकि इशिदा

20 सितम्बर, 1949 को जापान में जन्मे प्रो. हिदेआकी इशिदा ने सन् 1978में तोक्यो यूनिवर्सिटी ऑफ फॉरेन स्टडीज से हिन्दी भाषा एवं साहित्य में एम.ए. करने के उपरान्त भारत में रह कर हिन्दी तथा मराठी भाषा का गहन अध्ययन किया। आपने आधुनिक हिन्दी और मराठी कहानी साहित्य में विशेषज्ञता प्राप्त की है तथा अनेक हिन्दी तथा मराठी रचनाओं का जापानी भाषा में अनुवाद भी किया है। 'हिरोशिमा की कविताएँ' शीर्षक से आपने जापानी कवि सांकिची तोगे की कविताओं का हिन्दी तथा मराठी में अनुवाद किया है। सन् 2011 में आपने हिन्दी कहानीकार उदय प्रकाश की कुछ कहानियों का जापानी में अनुवाद किया । इससे पूर्व सन् 1977 में आपने जैनेन्द्र कुमार के उपन्यास 'त्याग-पत्र' का अनुवाद किया था। इसके अतिरिक्त आप समय-समय पर विभिन्न हिन्दी तथा मराठी रचनाओं के अनुवाद अपनी जापानी पत्रिका 'हिन्दी साहित्य' में प्रकाशित करते रहते हैं। सम्प्रति आप जापान की प्रसिद्ध दाइतो बुंका यूनिवर्सिटी में हिन्दी भाषा एवं साहित्य के प्रोफेसर हैं। भारत सरकार के प्रतिष्ठित विश्व हिंदी सम्मान से सम्मानित हैं।

Email : ishardas920@gmail.com
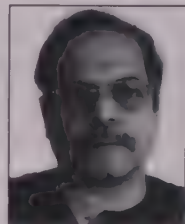
अशोक भौमिक

31 जुलाई, 1953 को जन्मे श्री अशोक भौमिक ने सन् 1973 में कानपुर विश्वविद्यालय से विज्ञान विषय में स्नातक की डिग्री प्राप्त की। कला और लेखन के प्रति रुझान युवावस्था से ही था। वे हिंदी एवं कला जगत् की अनेक जानी-मानी पत्रिकाओं यथा 'कला दीर्घा', 'कला त्रैमासिक', 'रविवार', 'साक्षात्कार', 'वागर्थ', 'रंग-प्रसंग', 'तहलका', 'बया', 'पहल' एवं 'नया ज्ञानोदय' में निरंतर लिखते रहे हैं। आनन्द बाजार पत्रिका, जनसत्ता, प्रभात खबर, नई दुनिया जैसे अखबारों के विशेषांकों में कला पर लेखन प्रकाशित करते रहे हैं। वागर्थ, 'बया' एवं 'नया ज्ञानोदय' के कला-संपादन से भी जुड़े हैं।

आपकी अनेक पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं जिनमें 'आइस पाइस', 'मोनालीसा हँस रही थी', 'शिप्रा एक नदी का नाम है' जैसे कहानी संग्रह एवं उपन्यास विशेष रूप से उल्लेखनीय है। अब तक देश-विदेश में उनकी अनेक एकल कला प्रदर्शियाँ हो चुकी हैं। आपने न्यूयॉर्क, लाहौर, दुबई, पाकिस्तान आदि देशों में भी अपनी कला को प्रदर्शित किया है। उनकी कलाकृतियाँ देश-विदेश की अनेक कला-दीर्घाओं एवं कला-संग्राहकों के संग्रह में संगृहीत हो चुकी हैं।

Email : bhowmick.ashok@googlegmail.com

スレーシュリトゥパルナ
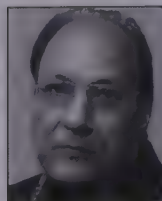
1949年7月12日、マトゥラーの生まれ。デリー大学ヒンディー文学科・修士、博士。「新しい詩（ナイー・カヴィター）における劇的要素」のテーマで研究。

1971年から2002年まで、デリー大学傘下の有名なヒンドゥー・カレッジで教鞭をとる。1988年から1992年まで、トリニダード・トバゴのインド高等弁務官事務所にて外交官として勤務。1999年から2002年まで、モーリシャスのマハートマー・ガーンディー研究所の「ジャワーハルラール・ネルー・インド研究室」にて客員研究員として研究に従事。2002年から2012年まで日本の有名な東京外国語大学にて客員教授として勤務の後、退職。

「ムクティボードの詩作」「ヒンディー語と海外」「ヒンディー語の世界」「孤独のスズメを見よ」「私の働き者のことばたち」「日本の地平に掛かるインド関係作品の虹」「日本の民話」「新しい詩における劇的要素」「東南アジア諸国におけるヒンディー語教育」「カーミル・ブルケ神父：インド的精神の光」を含むその他の書籍の出版。「日本のヒンディー語教育の伝統」と「21の日本民話」は近刊予定。

日本で三度、ヒンディー語の国際会議の計画と実施（2006年、2008年、2012年）。多くのインド国内外の会議、セミナー、ワークショップに精力的に参加。

1980年、最初の詩集「孤独のスズメを見よ」の出版によりウッタル・プラデーシュ州ヒンディー・サンスターン（研究所）賞受賞。アメリカ、日本、カナダ、トリニダード、スリナム、ギアナ、フィジー、モーリシャス、フランス、ドイツ、イタリア、その他ヨーロッパ諸国歴訪と滞在。

「世界ヒンディー財団」（ニューヨーク）の国際委員。財団の季刊雑誌「ヒンディー世界」の編集。海外におけるヒンディー語の普及に貢献したとして、「インド学術研究所」（トリニダード）より「トリニダード・ヒンディー語功労者賞」、トリニダード・トバゴ・ヒンディー語基金より「ヒンディー語基金賞」、ウッタル・プラデーシュ州ヒンディー・サンスターンより「海外ヒンディー語普及賞」（2004年）をそれぞれ受賞。カーミル・ブルケ賞（イラーハーバード、2006年）、「サラスヴァティー文学賞」（イラーハーバード、2009年）受賞。「文学栄誉賞」（ラクナウーのヒンディー・ウルドゥー文学賞委員会、2016年）受賞。

現在：K・K・ビルラー財団理事（ニューデリー）

Email : rituparna.suresh@gmail.com
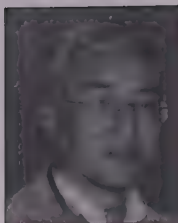
石田英明

1949年9月20日生まれ。1978年東京外国語大学院修士課程修了。専攻はヒンディー文学。後にインドに滞在してマラーティー語も習得。ヒンディー語とマラーティー語の文学を研究し、文学作品を日本語に翻訳。「ヒロシマの詩」という題名で峠三吉の詩集をヒンディー語とマラーティー語に翻訳・出版。2011年にはヒンディー語作家ウダイ・プラカーシの短編の翻訳を出版。1977年にヒンディー語作家ジャイネーンドラ・クマールの長編小説「辞表」の翻訳を始め、後に完成した。その他のヒンディー語の作品の翻訳を自身が主宰する翻訳雑誌「ヒンディー文学」に掲載している。インド政府の「国際ヒンディー語賞」受賞。現在、大東文化大学教授。

Email : ishardas920@gmail.com
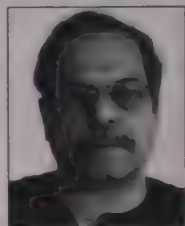
アショークボゥミク

1953年7月31日生まれ。1973年カーンプル大学学士（理科）。早いうちから絵画の創作と執筆活動に興味を持つ。ヒンディー語と美術の有名な雑誌、例えばKalā Dīrghā、Kalā Traimāsik、Ravivār、Sākṣātkār、Vāgarth、Raṅg Prasaṅg、Tahalkā、Bayā、Pahal、Nayā Gyānoday、などに多く執筆している。Ānand Bāzār Patrikā、Jansattā、Prabhāt Khabar、Nayī Duniyāなどの新聞の特集号の芸術欄にも執筆を続けている。Vāgarth、Bayā、Nayā Gyānodayの美術欄の編集にも携わっている。

現在までに多くの書物が出版されている。「アイス・ハイス」「モナリザは笑っている」「シプラーとは川の名前なり」などの短編集と長編小説が重要。インドと海外にて多くの個展を行った。ニューヨーク、ラホール、ドバイ、パキスタンなどでも作品を展示した。インドと海外の多くの美術館や個人に作品が所蔵されている。

Email : bhowmick.ashok@googlegmail.com

戦争の悲惨さについての
授業中ヒロシマについて
語ると、一人の日本の学生が
言ったー私達はヒロシマを覚えて
いたくない。私達は過去でなく
未来を見るべきだ。これを聞いて
私の心は動揺した。疑問が湧いた。
過去を忘れて我々に未来は
ありうるのか？ヒロシマを忘れる
ことはできるのか？もしヒロシマが
忘れ去られたら、さらにいくつもの
ヒロシマが生まれてしまうだろう。
ヒロシマの記憶こそが何度も
何度も核戦争の悲惨さを世界に
知らしめてきたのだ。今日全人類を
破壊とテロリズムの黒雲が覆い
そこに隠れた一閃の火花と
核爆弾の山に陣取った
狂気の政治家の
尊大な自意識により核戦争は
起こりうる。そして人類の文明は
永遠に滅びてしまう。
このような時だからヒロシマの記憶こそが
世界平和の希望の光であることが
証明される。
私にとってヒロシマの
廃墟の原爆ドームはタージマハルと
同じぐらい重要である。タージマハルは
愛の象徴であり、原爆ドームは
その痛ましい姿により我々に世界平和の
メッセージを送っている。だから私は
迷うことなく信じる。
世界を核爆弾の悲劇から
救うにはヒロシマの記憶を
守り続けねばならない。
この詩集の詩はヒロシマの記憶を
守り続けるためのささやかな努力である。